सादर प्रकाशनार्थ

रक्षाबंधन का पावन पर्व

कोरबाः 6 अगस्त 2017—प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय टी.पी.नगर कोरबा में रक्षाबंधन के पावन अवसर पर ईश्वरीय रक्षा सूत्र बंधवाने के लिये नगरवासी प्रातः 7:00 बजे से रात्रि 9:00 बजे तक सादर आमंत्रित हैं।

प्रशांति वृद्ध आश्रम में भी रह रहे, वरिष्ठ नागरिकों को अपनेपन की महसूसता आई, जब ब्रह्माकुमारी बहनों ने उनकी कलाई में रक्षा सूत्र बांधा। कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय कोरबा में कन्याओं के समूह ने, अपने मध्य ब्रह्माकुमारी बहनों को पाकर, उनके जीवन से त्याग तपस्या और सेवा भाव की प्रेरणा लेकर स्वयं के जीवन को समाज उपयोगी बनाने की प्रतिज्ञा की। जिला जेल कोरबा में राखी की सौगात पाकर सभी आत्म विभोर हो गये और अपनी एक कमजोरी को छोड़ने का दृढ़ संकल्प लिया। इसके साथ ही अंचल में वैदेही वत्सला बालिका गृह कोरबा, शासकीय बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता प्रशिक्षण केन्द्र कोरबा, पुलिस लाईन रक्षित केन्द्र कोरबा, बाल्मिकी आश्रम कोरबा, रोटरी मूक बधिर विद्यालय एवं दिव्य ज्योति छात्रावास, अंकुर विशेष विद्यालय कोरबा, में ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा रक्षा सूत्र बांधा गया। कोरबा अंचल में स्थापित ब्रह्माकमारीज के सेवाकेन्द्रों पर भी रक्षाबंधन का पावन पर्व बड़ी ही आत्मीयता से मनाया जा रहा है।

रक्षाबंधन सभी पर्वों में एक अनोखा पर्व ही नहीं लेकिन भारतीय संस्कृति तथा मानवीय मूल्यों को प्रत्यक्ष करने वाला, अनेक आध्यात्मिक रहस्यों को प्रकाशित करने वाला और भाई—बहन के वैश्विक रिश्ते की स्मृति दिलाने वाला सभी के लिये एक परमात्म उपहार है। रक्षा बंधन के पावन पर्व पर रक्षा—सूत्र बांधने से पूर्व बहन, भाई के मस्तक पर चंदन का तिलक कर, जीवन को शुद्ध शीतल और सुगंधित बनाने की प्रेरणा देती है। तिलक दायें हाथ से किया जाता और राखी दायें हाथ पर बांधी जाती है। यह विधि हमें यह प्रेरणा देती है कि हम सदा राइट अर्थात् सकारात्मक चिंतन करते हुए राइट अर्थात् श्रष्ठ कर्म ही करें, जिससे आत्मा अनिष्ट परिणामों व दुःख और अशांति से सुरक्षित रह सके। मिठाई खिलाने का भाव यही है कि कार्य व्यवहार में अपने जीवन को मधुर बनाकर अपने व्यवहार को मधुर बनाये। किसे नहीं इंतजार होता, अपनी प्यारी बहना के रक्षा सूत्र रूपी, प्यार क बंधन में बधने का, बहना भी कहती की सात समुन्दर पार से भी भाई मेरे आज के दिन मुझे याद कर लेना। बचपन

की यादों को संजाये यह रक्षा सूत्र अपने प्राणों की भी कुर्बानी देकर, अपनी प्यारी बहना की सुरक्षा की याद दिलाता है।

मानवता की सेवा में, ब्रह्माकुमारी रूकमणी